P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-11* February 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

सामाजिक बदलाव में हिंदी सिनेमा का योगदान

रीना कौर ढिल्लों
अध्यक्षा,
पत्रकारिता व जनसंचार विभाग,
माता गुजरी कॉलेज,
फतेहगढ़ साहिब, पंजाब, भारत

दमनप्रीत कौर
छात्रा,
पत्रकारिता व जनसंचार विभाग,
माता गुजरी कॉलेज,
फतेहगढ़ साहिब, पंजाब, भारत

सारांश

शुरू से ही किसी समाज में सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक बदलाव लाने में मीडिया का अतुलनीय योगदान रहा है। भारत को गुलामी की जंजीरों से आजादी दिलाने में और लोगों में क्रांति व देशभक्ति का जज्बा भरने में अंडरग्राउंड प्रेस का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यही नहीं, सामाजिक कुरीतियों को जड़ से मिटाने में राजा राममोहन राय जैसे समाज सुधारकों ने भी प्रेस का ही सहारा लिया।

सिनेमा की बात करें तो सिनेमा एक सशक्त माध्यम के रूप में उभरकर सामने आया है जिसे हर आयु व वर्ग के लोग पसंद करते हैं। लोगों के दृष्टिकोण में बदलाव लाने में भी सिनेमा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आतंकवाद, बाल विवाह, विधवा विवाह, बाल श्रम, मानवीय अधिकार, नारी सशक्तिकरण जैसे मुद्दों पर बनी हिंदी फिल्मों ने लोगों को सोचने व अपने दृष्टिकोण को बदलने के लिए प्रेरित किया।

मदर इंडिया (1957), नया दौर (1957) , कर्म (1977), इंसाफ का तराजू (1980), निकाह (1982), लगान (2001), स्वदेस (2004), रंग दे बसंती (2006), चक दे इंडिया (2007), तारे जमीं पर (2007), उड़ान (2010), पीपली लाइव (2010), पी के (2014), दंगल (2016) जैसी फिल्मों ने लोगों को जागरूक करने व समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

लोगों की निजी जिंदगी से लेकर सामाजिक जिंदगी में हिंदी फिल्मों के कारण क्या बदलाव आया है और विभिन्न मुद्दों को लेकर उनका दृष्टिकोण कितना बदला है , यही जानना इस शोध पत्र का उद्देश्य है।

मुख्य शब्द : हिंदी सिनेमा, सामाजिक बदलाव।

प्रस्तावना

शुरू से ही सिनेमा लोगों के मनोरंजन का बेहतरीन माध्यम रहा है। भारत में सिनेमा की शुरुआत 1896 में लयूमर ब्रदर्स ने मुंबई के वाटसन होटल में सिनेमैटोग्राफी प्रदर्शनी लगाकर की । भारतीय सिनेमा के पिता दादा साहेब फाल्के को कहा जाता है जिन्होंने 1913 में पहली फीचर फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' का निर्माण किया। उस समय मूक फिल्मों का निर्माण होता था । 1931 में अरदेशिर ईरानी ने पहली भारतीय बोलती फिल्म 'आलम आरा' रिलीज की। 1950 के दशक में हिंदी फिल्में श्वेत श्याम से रंगीन हो गई। उस समय फिल्मों का मुख्य विषय प्रेम था और संगीत की प्रधानता थी। 1960–70 के दशक की फिल्मों में हिंसा का प्रभाव रहा। 1980 और 1990 के दशक से प्रेम आधारित फिल्में वापस लोकप्रिय होने लगी । 1990 के बाद बनने वाली फिल्में विदेशों में भी लोकप्रिय होने लगी। भारतीय फिल्म उद्योग की वर्ष 2011 में कुल आय 93 अरब रही जो अब तकरीबन 150 अरब तक पहुंच गई है । पूरे विश्व में 90 से ज्यादा देशों में भारतीय फिल्में प्रदर्शित होती है । सभी भाषाओं को मिलाकर भारत में प्रतिवर्ष 1600 तक फिल्मे बन रही है। पहली बार भारत की ओर से महबूब खान की फिल्म 'मदर इंडिया' (1957) ऑस्कर के लिए नामांकित हुई । मीरा नायर की फिल्म 'सलाम बॉम्बे' भी ऑस्कर की दौड़ में शामिल हुई। आमिर खान की फिल्म 'लगान' भी इसी दौर में शामिल हुई। 'गांधी' में कॉस्टयूम डिजाइनिंग के लिए भानु अथैया को ऑस्कर मिला । 2009 में ब्रिटिश भारतीय फिल्म 'स्लमडॉग मिलेनियर' में 'जय हो... गीत के लिए गुलजार और संगीत के लिए ए. आर. रहमान को ऑस्कर पुरस्कार मिला। हैदराबाद में स्थापित रामोंजी फिल्म सिटी का नाम दुनिया का सबसे बड़ा जीवित स्टूडियो के रूप में गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज है। इस स्टूडियो में 47 साउंड स्टेज है और यह 1666 एकड़ भूमि में स्थापित है । यह स्टूडियो 1996 में स्थापित किया गया था।

अध्ययन का उद्देश्य

लोगों की निजी जिंदगी से लेकर सामाजिक जिंदगी में हिंदी फिल्मों के कारण क्या बदलाव आया है और विभिन्न मुद्दों को लेकर उनका दृष्टिकोण कितना बदला है , यही जानना इस शोध पत्र का उद्देश्य है।

1. लोगों का फिल्में देखने का मुख्य उद्देश्य क्या होता है?
2. वास्तविकता पर आधारित फिल्मों की ओर लोग कितना आकर्षित होते हैं?
3. क्या फिल्में देखने के बाद लोगों की जिंदगी में बदलाव आता है?

परिकल्पनाएं

1. फिल्में देखने का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन करना होता है।
2. लोग वास्तविकता पर आधारित फिल्मों की ओर अधिक आकर्षित नहीं होते।
3. लोगों की जिंदगी में फिल्में देखने के बाद अधिक बदलाव नहीं आता।

खोज विधि

इस खोज के लिए सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया है। 11 प्रश्नों की प्रश्नावली तैयार की गई है जिनमें 10 क्लोज एंडेड (close ended) प्रश्न है और एक ओपन एंडेड (open ended)। यह सर्वेक्षण फतेहगढ़ साहिब में किया गया है। इस सर्वेक्षण में 25 औरतों और 25 मर्दों से प्रश्नावली भरवाई गई है।

साहित्यावलोकन

2013 में प्रकाशित खोज पत्र 'भारतीय सिनेमा का नौजवानों पर प्रभाव – जयपुर के संदर्भ में' अध्ययन में स्पष्ट किया गया है कि फिल्में नैतिकता के लिए घातक हैं और समाज में कई समस्याएं पैदा कर रही है। इसमें यह भी स्पष्ट किया गया है कि सिनेमा का नौजवानों पर सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। साथ में यह भी नतीजा निकाला गया है की फिल्में इंसान के मनोविज्ञान, व्यवहार को अधिक प्रभावित करती हैं। 2014 में सिसोदिया, कीर्ति द्वारा '21वीं सदी में भारतीय सिनेमा का अध्ययन व सामाजिक मुद्दे आमिर खान की फिल्मों के संबंध में' खोज पत्र में अध्ययन किया गया कि लोगों की मानसिकता में बदलाव लाने में आमिर खान की फिल्में सकारात्मक भूमिका निभाती हैं। अरूणा नटराजन द्वारा लिखे खोज पत्र 'हॉलीवुड और भारतीय फिल्म उद्योग और इसका प्रभाव' में स्पष्ट किया गया है कि भारतीय सिनेमा हॉलीवुड के नक्शे कदम पर चलता है जो हमारी संस्कृति और दृष्टिकोण को प्रभावित करता है।

सामाजिक परिपेक्ष्य में बदलाव लाने हेतु बनी हिंदी फिल्मों में कुछेक फिल्मों का वर्णन इस प्रकार है

मदर इंडिया

1957 में महबूब खान की फिल्म 'मदर इंडिया' में स्वतंत्रता के बाद भारत में आ रहे सामाजिक व सांस्कृतिक बदलावों व परिवर्तनों को दिखाया गया है। इस फिल्म में नरगिस ने विधवा स्त्री की भूमिका निभाई है जो बहुत मुश्किलों से अपने बच्चों का पालन पोषण करती है। इसमें मां अपने ही बच्चे को मार देती है जब वह गलत रास्ते पर चलने लगता है।

मंथन

श्याम बेनेगल की 1976 में बनी यह फिल्म गुजरात के खेड़ा जिले के किसानों पर आधारित है जो इकट्ठे मिलकर कार्य करते हैं जो ना केवल उनके लिए बल्कि समाज के लिए लाभप्रद था।

दामिनी

1993 में बनी इस फिल्म में अदाकारा को न्याय के लिए समाज के विरुद्ध लड़ते हुए दिखाया गया है।

लज्जा

2001 में बनी यह फिल्म भारतीय समाज में स्त्रियों की दशा और दिशा को दर्शाती है।

मातृभूमि

2003 में बनी यह फिल्म भ्रूण हत्या पर आधारित है जिसमें यह दिखाया गया है कि देश का भविष्य कैसा होगा अगर यहां लड़कियों की हत्या होती रही।

स्वदेस

2004 में बनी इस फिल्म में ब्रेन ड्रेन की समस्या को उभारा गया है। यह फिल्म एक एन आर आई के इर्द–गिर्द घूमती है जो नासा के लिए काम करता है और वह एक गांव में आता है जिससे उसकी और गांव वालों कि जिंदगी बदल जाती है।

रंग दे बसंती

2006 में बनी इस फिल्म में विद्यार्थियों को सरकार का विरोध करते हुए दिखाया गया है । इस फिल्म का समाज पर यह प्रभाव रहा कि लोगों ने प्रशासन में बढ़ रहे भ्रष्टाचार का विरोध किया।

डोर

2006 में बनी इस फिल्म में एक विधवा की क्या जिंदगी होती है और उसे कौन सी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है इसको बेहद उम्दा ढंग से उभारा है।

चक दे इंडिया

2007 में बनी इस फिल्म में भारत में स्त्रियों को हॉकी खेलते हुए दिखाया गया है । इसके साथ ही इसमें धर्म, विवाद, पक्षपात जैसे कई मुद्दों को भी उठाया गया है। इस फिल्म ने लड़कियों में हॉकी के लिए उत्साह पैदा किया।

तारे जमीं पर

2007 में बनी इस फिल्म में विशेष बच्चे को दिखाया गया है जो रोजमर्रा के कार्यों को बड़ी मुश्किल से करता है और उसको समझने की बजाय उसके माता पिता उसे अधिक नंबर प्राप्त करने के लिए दबाव डालते हैं । इसमें बताया गया है कि प्रत्येक बच्चे की जरूरतें दूसरों से भिन्न होती है और माता पिता व अध्यापकों को विशेष ध्यान देना चाहिए।

वेडनेसडे

2008 में बनी इस फिल्म में आज के समय के असहनशील व हिंसक युग में आम इंसान को क्या मुसीबतों का सामना करना पड़ता है और किन मानसिक द्वंदों से जूझना पड़ता है इसका बखूबी चित्रण किया गया है।

3 इडीयटस

2009 में बनी इस फिल्म में बच्चों की पढ़ाई को लेकर व कैरियर से संबंधित धारणाओं को तोड़ते हुए दिखाया गया है।

पीपली लाइव

2010 में बनी इस फिल्म में सामाजिक मुद्दों और मीडिया पर व्यंग्यात्मक ढंग से प्रहार किया गया है।

लंच बॉक्स

2013 में बनी इस फिल्म में इंसान के भीतर चल रहे द्वंद को बेहतरीन ढंग से दिखाया गया है।

पीके

2014 में रिलीज हुई इस फिल्म में धार्मिक अंधविश्वासों पर प्रहार किया है।

दंगल

2016 में रिलीज हुई इस फिल्म में उस समाज में लड़कियों को कुश्ती में लड़कों को पछाड़ते हुए दिखाया गया है जहां लड़कियों को घर से निकलने की भी इजाजत नहीं होती।

मदारी

2016 में बनी इस फिल्म में यह स्पष्ट किया गया है कि आम इंसान के लिए परिवार का क्या महत्व होता है और किस प्रकार राजनीतिज्ञ आम इंसान की अपेक्षा करते हैं।

पैडमैन

2018 में बनी इस फिल्म में जहां एक ओर सामान्य इंसान के मनोविज्ञान को दिखाया गया है, वहीं दूसरी ओर एक पति के जज्बे को भी स्पष्ट किया है । यह फिल्म रूढ़िवादी धारणा के ऊपर कटाक्ष करती है।

आंकड़ा विश्लेषण

1) आप को थिएटर में फिल्म देखना पसंद है या घर पर?

क) घर ख) थिएटर

	मर्द	औरतें
घर	07	14
थिएटर	18	11

28 % मर्द और 56 % औरतें घर में फिल्में देखना पसंद करते है । 72% मर्दों और 44% औरतों को थियेटर में फिल्में देखना अच्छा लगता है।

2) आप महीने में कितनी बार थिएटर में फिल्म देखने जाते है?

क) एक बार ख) दो बार

ग) हर सप्ताह घ) कभी कभी

	मर्द	औरतें
एक बार	3	2
दो बार	2	1
हर सप्ताह	–	–
कभी कभी	20	22

महीने में एक बार 12% मर्द और 8% औरतें थियेटर में फिल्म देखने जाते है। थियेटर में महीने में दो बार फिल्म देखने 8% मर्द और 4% औरतें जाती है। हर सप्ताह ना ही मर्द और ना ही औरतें फिल्म देखने जाते है। 80% मर्द और 88% औरतें कभी कभी फिल्म देखने थियेटर जाते है।

3) आपको किनके साथ फिल्म देखनी पसंद है?

क) परिवार के साथ ख) दोस्तों के साथ

	मर्द	औरतें
परिवार के साथ	2	10
दोस्तों के साथ	23	15

8% मर्दों को और 40% औरतों को परिवार के साथ फिल्म देखना पसंद है। दोस्तों के साथ 92% मर्दों और 60% औरतें फिल्म देखना पसंद करते है।

4) फिल्म देखने के पीछे आपका क्या मंतव होता है?

क) मनोरंजन करना

ख) सूचना प्राप्त करना

ग) प्रेरणा हासिल करना

घ) अपनों के साथ समय बिताना

	मर्द	औरतें
मनोरंजन करना	12	10
सूचना प्राप्त करना	03	05
प्रेरणा हासिल करना	06	03
अपनों के साथ समय बिताना	04	07

फिल्म देखने के पीछे 48% मर्दों और 40% औरतों का मंतव्य मनोरंजन करना होता है। 12% मर्द और 20% औरतें सूचना प्राप्त करने के लिए फिल्म देखते हैं। प्रेरणा हासिल करने के लिए 24% मर्द और 12% औरतें फिल्म देखती है। 16% मर्दों व 28% औरतों का फिल्म देखने का मंतव अपनों के साथ समय बिताना होता है।

5) आपको किस तरह की फिल्में पसंद है?

क) कमेडी ख) ऐक्शन

ग) रोमांटिक घ) प्रेरणादायिक

ड) डरावनी

	मर्द	औरतें
कमेडी	06	10
ऐक्शन	03	03
रोमांटिक	05	01
प्रेरणादायिक	11	10
डरावनी	–	01

24% मर्दों और 40% औरतों को कमेडी फिल्में देखना पसंद है। ऐक्शन फिल्में 12% मर्द और 12% औरतें देखती है। 20% मर्द और 4% औरतें रोमांटिक फिल्मों को पसंद करते हैं। प्रेरणादायक फिल्में 44% मर्द और 40% औरतें देखती हैं। डरावनी फिल्मों को 4% औरतें पसंद करती है।

6) आपको किस तरह की फिल्में ज्यादा आकर्षित करती है?

क) कामर्शियल ग) आर्ट

	मर्द	औरतें
कामर्शियल	10	11
आर्ट	15	14

कमर्शियल फिल्में 40% मर्द और 44% औरतों को आकर्षित करती हैं। 60% मर्दों और 56% औरतों को आर्ट फिल्मे आकर्षित करती हैं।

7) फिल्मों में कौन सा तत्व आपको सब से अधिक प्रभावित करता है?

क) गीत संगीत ख) विशेष प्रभाव
ग) संवाद घ) कला
ड) अभिनेता

	मर्द	औरतें
गीत संगीत	04	02
विशेष प्रभाव	02	06
संवाद	04	02
कला	12	13
अभिनेता	03	02

फिल्मों का गीत संगीत 16% मर्दों और 8% औरतों को प्रभावित करता है। 8% मर्दों और 24% औरतों को विशेष प्रभाव आकर्षित करते हैं। संवाद 16% मर्दों और 8% औरतों को आकर्षित करते हैं। 48% मर्दों और 52% औरतों को फिल्म की कला प्रभावित करती है। अभिनेता 12% मर्दों और 8% औरतों को अच्छे लगते हैं।

8) सामाजिक समस्याओं व मुद्दों से सम्बंधित फिल्मों को आप कितना पसंद करते है?

क) बहुत अधिक ख) अधिक
ग) औसत घ) कम
ड) बहुत कम

	मर्द	औरतें
बहुत अधिक	07	08
अधिक	08	13
औसत	08	04
कम	02	–
बहुत कम	–	–

सामाजिक समस्याओं और मुद्दों से संबंधित फिल्मों को 28% मर्द और 32% औरतें बहुत अधिक पसंद करती हैं। 32% मर्द और 52% औरतें अधिक पसंद करती हैं। सामाजिक समस्याओं और मुद्दों से सम्बंधित फिल्मों को औसत 32% मर्द और 16% औरतें पसंद करती हैं। 8% मर्दों ऐसी फिल्मों को कम पसंद करते हैं।

9) क्या किसी फिल्म को देखने के बाद आप ने किसी समस्या के खिलाफ आवाज बुलंद की है?

क) हां ख) नहीं

	मर्द	औरतें
हां	06	06
नहीं	19	19

24% मर्दों और औरतों ने फिल्म को देखने के बाद समस्या के खिलाफ आवाज उठाई है। 76% मर्दों और औरतों ने फिल्म को देखने के बाद किसी समस्या के खिलाफ आवाज नहीं उठाई है।

10) किसी फिल्म को देखने के बाद आपने अपने दृष्टिकोण और व्यवहार में परिवर्तन महसूस किया है?

क) हां ख) नहीं

	मर्द	औरतें
हां	16	21
नहीं	09	04

फिल्म देखने के बाद 64% मर्दों और 84% औरतों ने अपने दृष्टिकोण और व्यवहार में परिवर्तन महसूस किया है और 36% मर्दों और 16% औरतों ने कोई परिवर्तन महसूस नहीं किया।

11) कौन सी फिल्म ने आपको सबसे अधिक प्रभावित किया है और क्यों?

लोगों को वह फिल्म याद रहती हैं जिनमें उनको कोई न कोई प्रेरणा मिलती हैं। अधिकतर नौजवानों ने कहा कि थ्री ईडियट्स फिल्म ने उन्हें काफी प्रभावित किया हैं। इसके अतिरिक्त दंगल, गदर, तमाशा उड़ता पंजाब, बाहुबली, बॉर्डर, नायक जैसी फिल्म में लोगों के जहन में रही।

निष्कर्ष

उद्देश्य 1

फिल्मे देखने का मुख्य उद्देश्य क्या होता है?

परिकल्पना 1 फिल्मे देखने का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन करना होता है।

यह परिकल्पना सही साबित हुई क्योंकि 48% मर्दों और 40% औरतों ने स्वीकारा कि वह मनोरंजन के लिए फिल्में देखते हैं । 92% मर्दों और 60% औरतों को दोस्तों के साथ फिल्में देखना अधिक पसंद है । 72% मर्दों को थिएटर में फिल्में देखना अच्छा लगता है जबकि 56% औरतों ने स्वीकारा कि उन्हें घर पर फिल्में देखना अधिक पसंद है।

उद्देश्य 2

वास्तविकता पर आधारित फिल्मों की ओर लोग कितना आकर्षित होते हैं।

परिकल्पना 2 लोग वास्तविकता पर आधारित फिल्मों की ओर अधिक आकर्षित नहीं होते।

यह परिकल्पना गलत साबित हुई । 60% मर्दों और 56% औरतों का मानना है कि उन्हें आर्ट फिल्में व वास्तविकता पर आधारित फिल्में अधिक आकर्षित करती हैं। 48% मर्दों ने और 52% औरतों का कहना है कि उन्हें फिल्मों में अभिनय व कला अधिक आकर्षित करती है।

उद्देश्य 3

क्या फिल्में देखने के बाद लोगों की जिंदगी में बदलाव आता है।

परिकल्पना 3 लोगों की जिंदगी में फिल्में देखने के बाद अधिक बदलाव नहीं आता।

52% औरतों का मानना है कि उन्हें सामाजिक समस्याओं से संबंधित फिल्में अधिक पसंद है जबकि केवल 32 प्रतिशत मर्दों ने इस संबंध में अपनी सहमति दिखाई। 84% औरतें मानती है कि फिल्में देखने के बाद उनके व्यवहार में परिवर्तन आता है और 64% मर्दों ने भी इसे स्वीकार किया। 76% औरतों और मर्दों का मानना है कि फिल्म देखने के बाद उन्होंने किसी भी सामाजिक समस्या के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद नहीं की।

यह खोज करने के बाद हम इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि फिल्में मनुष्य को प्रभावित करती हैं। फिल्में देखने के बाद लोगों के व्यवहार और दृष्टिकोण में परिवर्तन आता है। लोगों को कला और फिल्म की कहानी अधिक प्रभावित करती है। लोग कमर्शियल के मुकाबले

आर्ट फिल्मों में अधिक रुचि लेते हैं। लोग सामाजिक समस्याओं से संबंधित फिल्में देखते तो हैं पर देखने के बाद उस समस्या के खिलाफ आवाज नहीं उठाते । लोग थियेटर में फिल्में देखना तो पसंद करते हैं पर वह फिल्म देखने थियेटर कभी कभी जाते हैं । अधिकतर लोग परिवार के साथ फिल्म देखने की जगह दोस्तों के साथ फिल्म देखना अधिक पसंद करते हैं। अधिकतर लोग मनोरंजन के लिए फिल्में देखते हैं और उन्हें प्रेरणादायक फिल्में अधिक अच्छी लगती है। प्रश्नावली के अंतिम प्रश्न का उत्तर देने के लिए लोगों को एक दम कोई भी फिल्म याद नहीं आयी , इसका उत्तर देने के लिए लोगों को काफी देर सोचते रहे। निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि फिल्में लोगों को प्रभावित तो करती है परंतु उनका प्रभाव कुछ समय तक ही लोगों पर रहता हैं। कुछ समय बाद लोग फिल्मों को भूलने लगते हैं। ये तब स्पष्ट हुआ जब अंतिम प्रश्न में उन्हें कितनी देर ये सोचना पड़ा कि उन्हें कौन सी फिल्म पसंद है भाव किस फिल्म ने उन्हें अधिक प्रभावित किया हैं। समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में फिल्में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है क्योंकि फिल्में लोगों के दृष्टिकोण व व्यवहार को प्रभावित करती हैं।

संदर्भ पुस्तिका सूची

अग्रवाल, वीर बाला और गुप्ता, वी.एस. हैंडबुक ऑफ जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन, कंसेप्ट पब्लिशिंग कंपनी

एमी विलारिहो, फिल्म स्टडीज द बेसिकस, मनोहर पब्लिशर्स

कुमार, केवल जे, मास कम्युनिकेशन इन इंडिया, जैको हाउस

कोशिक, शारदा स्क्रिप्ट तो स्क्रीन, मक्मिलन पब्लिशर

रे सत्यजीत, आर फिल्म्स देयर फिल्म्स, ऑरियनट ब्लैकसवैन प्राइवेट लिमिटेड